

दृष्टि कंकां मय नाठाधिपं यं लुं कल मसिकर्षार्थं वयं धाय नमस्तुता ॥ २ ॥ सुलका
 यमहातमा कलकाय न हीनिही ॥ अष्टम वरु पदं निह कव याय नमस्तुता ॥ ३ ॥ छुकाव धूः
 महाकाय शिष्ट लक्ष कपालकं । सदा कल्याण काचिही शिष्ट याताकं नमस्तुता ॥ ४ ॥ धीगवः
 धूमहातमा सुनाया शुकाय धूर्ति वाम काम धुव धार्थ ज्ञानासन नमस्तुता ॥ ५ ॥ याताव धूः
 महाकाय दादा राय न रूचिनी । स्वक कयाय धर्मीनी यता वरु नमस्तुता ॥ ६ ॥ यताव धूः
 यताही छुकाव धूमहातमा । वरु लक्ष यवदत ममा वरु नमस्तुता ॥ ७ ॥ छुकाव धूः

जगन्मोक्ष

406

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ अथ कुरुक्षेत्रे युद्धम् ॥
 द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सजीवाम् ॥
 साधुना त्वमेव प्रहस्यसे ॥ पराङ्मुखोऽस्मीति शिरसा ॥
 मया त्वानुग्रहायैव हि जन्तूनामस्य चराचरम् ॥ गच्छतः ॥
 महाशय उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
 मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सजीवाम् ॥ साधुना त्वमेव प्रहस्यसे ॥
 पराङ्मुखोऽस्मीति शिरसा ॥ मया त्वानुग्रहायैव हि जन्तूनामस्य चराचरम् ॥
 गच्छतः ॥

तमा इति मखं कायं यवतु लयमाई छुकावडी विताया ॥ मानवता वसि तं वदवदिसु
खवक्र ४ समं कुं एति सायुता रुमिदद्यात् ॥ ॥ गता तावता ॥ पाक सवता यष्यादी पादो
पदाययता मदि अद्यता दद्यात् वक्तु तावमने तथा ॥ सर्वद्वय मखता न्ददि डित्रसियथा
कं । तक्रता अदि की दस्तु कालायां धूपने तथा ॥ समिदं कदि की सर्व पलायां दीपनीय न ॥ ने
व्यादि त्रसायता यत्र गकषु वन ल ॥ तमि ४ कय विवर्द नि सि तति ली पायाय दं ॥ नि कृता
सिद्धाया वलवदि कस्तु विपली मार्य यता वता दं ॥ कृत्तुं (का) दं विवर्दनी सूकल सीयत्ता ॥ नि ॥

नार्क (ता) धूमवनि ताठा ४ सूकल कविलरु लीयार्थ कृता ॥ गता वदिक त्री समिता धूपय ४ पुस्त
पदं सोख्यदं सोताठ्या दिरु लयदं सलिल मी कृन्दादि यथा रुमं । दीयादि फिविवर्द नादधि ४
जानता पि सोताठ्या दं । द्वायव लवर्दनी सूकल सयत्ता त्रकं तार्थकं ॥ तामूल धनदं सूत्र नः
नगाने लकी पदं ॥ ४४ गी सुकसिद्धि धनयदा इति लसया गे ताक सीयन ॥ मकि नर्म अत्र वि
परि त्रदि तांदद्यात् ता नायमा सुकसिद्धि विवर्दनी सूत्र (दी) ४ सीय विता दवता ॥ ॥ यगता
यत्रिलिक स समिधं यत्रि (ता) धया मन्ता नवा विनी समकू । रुद्रया त् सुवदया सिद्धा ॥ ॥

[illegible]

हा जगिषिय पात्र धार्य पाद्य मनादि कथमा मुनि कला रुद्र याग ॥ ॥ दंड प्रिया धाः
 न ॥ ॥ ॥ दंडा रुद्रि ॥ गुरु रुद्र सर्व दंडानीं मधुनी पल मादु गी प्रसना प्रद सद्ध
 हा मुक्ता लातूरे कथय ॥ मनु मूडा समायुक्त वडां कक्षादिया गत भक्ति गल टर्किना द्वाद
 नव क्रि समा कथय ॥ ॥ गल दं य प्र म धानी गलानं व द्वाद गी नहि म धा रितां पद्मी वृन्दा या
 दि गद वता ॥ यद्य यन्दा र्क म धा रु वीज डं का प्र सी म वाना द विन्द कला गी ग य म्मी वा धि रु रुः
 न विता ॥ डं द वता रुद्रि म र्व वी का प्र द य व र्द य मा दी छु क व डी वि ता य भा मा न ल य न प्र छु व न

[illegible]

॥००॥ श्रीसिद्धिदायकः सकृदाहं यद्वक्तव्यं तावत्कर्मणः

२५३ रुयञ्जाम्बिकद्वयम् ॥ यष्टिपुत्राश्च ॥ भाग्यम् ॥ ननु ॥ रुयञ्जाम्बिका ॥ ननु ॥ विनिष्ठा ॥

श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १ ॥

दिशो ह्यस्य दक्षिणं ॥ प्रोक्तं विष्णुना ॥ यच्चैतन्न कदापि न भविष्यति ॥ अथैवमस्मिन् ॥ मनुः

गङ्गादितामसः॥ ॥८॥ गङ्गादितामसः॥ ॥८॥ गङ्गादितामसः॥ ॥८॥ गङ्गादितामसः॥ ॥८॥

कलाकलितान्नभा

[illegible]

...संस्थानं यत्

यद्वै योऽपि न विदुः स्यात्तदा तस्मात्तन्मया दृष्टं

...सर्व...

कनन के कोणों में खड़ा है जो कि बहुत ही पवित्र है जो कि

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

कः गिरिवरः कर्मवत्पुत्रो ज्ञानयोगि यथा ॥ अथ समा ॥

१ आदित्यवाग॥ शामवाल॥ नृगवाल॥ वधवाल॥ वृद्धवाल॥ हुकवाल॥ हातिवाल॥
 उदग४ अमन४ नाग४ लारु४ गुरु४ वल४ काल४
 वलन४ काल४ उदग४ अमन४ नाग४ लारु४ गुरु४
 लारु४ अमन४ नाग४ लारु४ गुरु४ वल४ काल४
 काल४ गुरु४ अमन४ नाग४ लारु४ गुरु४ वल४
 गुरु४ नाग४ अमन४ नाग४ लारु४ गुरु४ वल४
 उदग४ अमन४ नाग४ लारु४ गुरु४ वल४

आदित्यवागि शामवाति नृगवालि वधवालि वृद्धवालि हुकवागवाति हातिव
 उदगवला अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला
 गुरुवला अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला
 अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला
 वलनवला अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला
 नागवला अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला
 लारुवला अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला
 गुरुवला अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला
 वलनवला अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला
 कालवला अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला
 गुरुवला अमनवला नागवला लारुवला गुरुवला वलनवला कालवला

यार्हिन ४

[illegible]

कृष्णकृष्णयुगनाम्नदेवतायामहावलाकनकाशयद्वन्द्वः श्रीमत्काष्ठः
 पञ्चयुगनाम्नसिंहस्यवृक्षद्वन्द्वः श्रीमत्काष्ठः
 मागतायुयं सुमागतान्दमासनमासितां ॥ ॥ वृक्षद्वन्द्वः श्रीमत्काष्ठः
 गिलादस्ययममूर्ध्नि कृष्णनलम्भतवेक्ष्वामधूनानामिकावाङ्क्रीयात्सत्यः ॥
 घृताद्वन्द्वधिवकटिगानूत्यांमायनहस्तपादयोः कृष्णद्वन्द्वः श्रीमत्काष्ठः
 कृष्णसनम्पत्रिकितां ॥ कृष्णलायावसंधनिधिरुपकृत्यसुतिर्यिवातुतासुष्मा ॥ लीस्वमहायः ॥
 अक्षिपकृत्यसुष्मा ॥ नैस ॥ सपृथक्सुष्मा ॥ स्वाननयः ॥ १

7 || ~~XX~~

~~XX~~

|| ~~XXXXXXXX~~ || || XXX

XX || XXX

XX || XXX

XX || XXX

7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

|| XXX || XXX

XX || XXX

XX || XXX

XX || XXX

XX || XXX

XX || XXX

7

